जवाब दो!!!
सरकार
www.jawabdosarkar.com
देश का पहला जवाबदेही पोर्टल

रेफरेंस संख्या –2020/wtpi/01 | E-Newsletter, Issued in Public Interest | बुधवार 22 अप्रैल 2020

रेपिड टेस्ट किट खरीदने की जल्दबाज़ी क्यों की गयी?

खुलासा : जिस चीनी कंपनी से आइसीएमआर ने ली किट, उसी से हमने भी खरीदी

राजस्थान की आपत्ति के बाद देशभर में रेपिड टेस्ट किट से जांच पर रोक

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

जयपुर. प्रदेश में कोरोना संक्रमण की जांच को गति देने के लिए इस्तेमाल हो रही रेपिड टेस्ट किट का उपयोग अब सरकार ने रोक दिया है। राजस्थान की आपत्ति के बाद देशभर में दो दिन के लिए इस किट से जांच पर रोक लगा दी गई है। यह किट भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) व राजस्थान दोनों ने ही आइसीएमआर से मान्यता प्राप्त चीन की वांडफो कंपनी से खरीदी थी। आइसीएमआर से राजस्थान को 30 हजार जांच किट मिली थी। वहीं राज्य सरकार भी दो लाख किट का ऑर्डर दिया था। इसमें से 10 हजार की आपूर्ति हो चुकी थी।

राज्य सरकार ने शुद्धता जांचने के लिए आइसीएमआर से मिली 168 किट की जांच करवाई, जिसमें शुद्धता 5% रही। सरकार ने मंगलवार सुबह ही इससे जांच नहीं करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दे दिए। साथ ही राजस्थान की खरीद के तहत संबंधित कंपनी का भुगतान भी फिलहाल रोक दिया है। गौरतलब है कि आइसीएमआर राज्यों को ये किट निशुल्क उपलब्ध करवा रहा है।

दो लाख किट का ऑर्डर, अब भुगतान रोका

पत्रिका में सबसे पहले

5,000 किट से हुई जांच

बताया जा रहा है कि तीन दिन में 5 हजार किट से जांच की भी जा चुकी थी। जिनमें से अब तक 36 नमूने पॉजिटिव पाए गए हैं। प्रभावित रामगंज और आस पास रैंडमली लोगों की इन किट से जांच की गई थी।

आइसीएमआर-एनआइवी करते हैं प्रमाणित

विशेषज्ञों के मुताबिक विदेश से भारत में इन किट के आने पर उसके लॉट नंबर और बैच नंबर को आइसीएमआर और नेशनल इंस्टीट्यूट आफ वॉयरोलोजी (एनआइवी) प्रमाणित करते हैं। इसके बाद ही उनसे जांच की जाती है। इसी आधार पर राज्य को भी अनुमति दी गई थी।

पीसीआर किट खरीदेंगे

राजस्थान में टेस्टिंग के वक्त आइसीएमआर की तापमान सहित अन्य गाइडलाइन का पूर्णतया पालन किया। इस समय प्रदेश में पीसीआर से ही जांचें की जा रही हैं। पीसीआर किट की खरीद के भी विभाग ने ऑर्डर कर दिए हैं।

रघु शर्मा, चिकित्सा मंत्री

शुद्धता में विफल हुई

आइसीएमआर से मिली 168 किट की शुद्धता का अध्ययन करवाया गया। इनकी शुद्धता सही नहीं पाए जाने पर प्रदेश में इन किट से जांच रोक दी गई है। राजस्थान ने खरीद का भुगतान भी रोक दिया।

रोहित कुमार सिंह, एसीएस, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग

कई देश भी उठा चुके हैं चीनी किट पर सवाल @नेशनल न्यूज

मुख्यमंत्री ने केंद्रीय टीम को सुनाई खरी-खरी

रेपिड टेस्ट किट खराब, यह दुर्भाग्यपूर्ण व गम्भीर

जयपुर @ पत्रिका. मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा, रेपिड टेस्ट किट के नतीजे संदिग्ध हैं। दुर्भाग्यपूर्ण है कि भारत सरकार जो किट मंगा रही वह खराब निकल रही हैं। यह गम्भीर मामला है कि आइसीएमआर को कहना पड़ा कि रेपिड टेस्ट स्थगित करते हैं। हमने सोचा था इससे जांचों की संख्या बढ़ेगी पर ऐसा नहीं हुआ।

मुख्यमंत्री ने स्थिति जांचने आई केंद्रीय टीम को भी कहा कि राजस्थान द्वारा चीन से हाल ही मंगवाई रेपिड टेस्ट किट के परिणाम ठीक नहीं आ रहे हैं। यह चिंता का विषय है। महामारी से लड़ने के लिए टेस्टिंग किट, वेंटीलेटर एवं अन्य मेडिकल उपकरण केन्द्र द्वारा खरीद कर राज्यों को उपलब्ध कराए जाने चाहिए। उधर, नागौर से सांसद हनुमान बेनीवाल ने पत्रिका में प्रकाशित खबर पर पीएमओ, केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री और राज्य से संबंधित अफसरों की जिम्मेदारी तय करने और कार्रवाई की मांग की है।

पीएम मानते तो...

मुख्यमंत्री के अनुसार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को वीडियो कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा था कि केंद्र पता करे कि किस देश में कौन सी रैपिड किट इस्तेमाल की जा रही है और उसके परिणाम कैसे हैं। गुणवत्ता वाली ही खरीदी जाए। यह बात मान ली जाती तो यह स्थिति नहीं बनती।

साभार:-राजस्थान पत्रिका में दिनांक 22/04/2020 को प्रकाशित खबर

चीनी रैपिड किट के नतीजे गलत, राजस्थान की आपत्ति के बाद देशभर में रोक लगी

आईसीएमआर ने कहा- अब इन किटों की ऑन ग्राउंड जांच के बाद करेंगे फैसला

भास्कर न्यूज | नई दिल्ली/जयपुर

इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) ने कोविड-19 की जांच के लिए चीन से मंगाई रैपिड टेस्ट किट के इस्तेमाल पर रोक लगा दी है। राजस्थान में इनसे 95% तक नतीजे गलत मिलने के बाद यह कदम उठाया गया। आईसीएमआर के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. आर गंगाखेड़कर ने कहा- आईसीएमआर के 8 इंस्टीट्यूट की टीमें दो दिन तक इन किट की ऑनग्राउंड टेस्टिंग करेंगी। किट खराब मिलीं तो इन्हें निर्माता कंपनी को वापस भेजा जाएगा। आईसीएमआर ने चीन की दो कंपनियों गुआंगझू वॉन्डफो बायोटेक और जुहाई लिवजोन डायग्नोस्टिक्स से 5 लाख किट मंगाई थीं। इससे पहले केंद्र से आई पांच सदस्यीय टीम एवं प्रदेश के अधिकारियों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि रैपिड किट कोरोना की जांच में फेल साबित हुई है। राज्य में इससे टेस्टिंग रोक दी गई है। यही नहीं 10 लाख में से बाकी 8 लाख किट की खरीद भी रोक दी गई है।

सरकार ने आईसीएमआर को लिखा है कि हम किट लौटाएंगे। उन्होंने सुझाव भी दिया कि कोरोना से लड़ने के लिए टेस्टिंग किट, वेंटिलेटर एवं अन्य मेडिकल उपकरण केंद्र सरकार की ओर से केंद्रीयकृत खरीद कर राज्यों को उपलब्ध कराए जाएं, ताकि राज्य सरकारों को इनकी खरीद में आसानी हो सके। आईसीएमआर ने कहा- 'हमें तीन राज्यों से सूचना मिली कि किट में गडबड़ी है। इनके नतीजों में काफी बड़ा अंतर है। इसलिए हमने राज्यों से दो दिन तक किट का इस्तेमाल रोकने को कहा है।'

नीदरलैंड, स्पेन और तुर्की सहित कई देश लौटा चुके हैं चीन का घटिया सामान

चीन से भेजी जा रही टेस्टिंग किट, मास्क और अन्य मेडिकल उपकरणों की गुणवत्ता सवालों में घिर गई है। इससे पहले स्पेन और तुर्की भी टेस्टिंग किट से सही नतीजे न आने की शिकायत करते हुए इसे वापस कर चुके हैं। वहीं, नीदरलैंड ने भी अपने मेडिकल कर्मचारियों के लिए 6 लाख मास्क मंगवाए थे। दावा किया गया था कि ये मास्क उच्च गुणवत्ता के हैं लेकिन नीदरलैंड के मुताबिक कई मास्क साइज में छोटे थे तो कई के फिल्टर ठीक नहीं थे। इसलिए इन सभी मास्क को चीन को वापस भेज दिया गया है।

रैपिड एंटीबॉडी टेस्ट किट के बारे में वो सब जो आप जानना चाहते हैं

क्या?...कोरोना की जांच में रैपिड एंटीबॉडी टेस्ट किट बेहद कारगर है क्योंकि इसमें 15 मिनट में ही रिपोर्ट आ जाती है। जबकि दूसरी तरह की जांच रिपोर्ट आने में 3 से 4 दिन लगते हैं। ऐसे में संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है।

क्यों?... जब वायरस शरीर में प्रवेश करता है तो हमारा शरीर उससे लड़ने के लिए एक हथियार तैयार करता है, जिसे एंटीबॉडीज कहते हैं। यह वायरस को नष्ट करता है। इस टेस्ट के जरिए इसी एंटीबॉडीज का पता लगाया जाता है।

कैसे?... एंटीबॉडीज कई तरह के होते हैं। एक- आईजीएम, दूसरा- आईजीजी। आईजीएम मिलने का मतलब है कि संक्रमण हाल ही में हुआ है। अगर सिर्फ आईजीजी दिखे और आईजीएम न दिखे तो माना जाता है कि संक्रमण पुराना है।

साभार:-दैनिक भास्कर में दिनांक 22/04/2020 को प्रकाशित खबर

रैपिड फेल्योर • मेडिकल कॉलेज ने सौंपी रिपोर्ट; कहा-सामान्य इंफेक्शन भी नहीं पकड़ पा रही रैपिड किट

159 कोरोना पॉजिटिव को रैपिड टेस्ट ने निगेटिव बताया, मेडिकल कॉलेज की रिपोर्ट के बिना करवाए 5032 टेस्ट, सिर्फ 36 पॉजिटिव; क्या सबके पीसीआर टेस्ट होंगे?

हैल्थ रिपोर्टर. जयपुर | चिकित्सा विभाग ने जिस रैपिड किट से कोरोना संदिग्धों की जांच शुरू की थी वह पूरी तरह फेल है। एसएमएस मेडिकल कॉलेज ने मंगलवार को चिकित्सा विभाग को मंगलवार को सौंपी रिपोर्ट में कहा है कि रैपिड किट सामान्य इंफेक्शन को भी नहीं पकड़ पा रही। यही नहीं पीसीआर टेस्ट में जो 159 लोग कोरोना पॉजिटिव मिले थे, उसमें से भी 94.6% को निगेटिव बता दिया। हैरत की बात है कि चिकित्सा विभाग ने मेडिकल कॉलेज को 100 किट देकर इसकी जांच कर इसके सही होने की पुष्टि करने को कहा था, लेकिन रिपोर्ट आए बिना ही टेस्ट को मंजूरी दे दी। इनसे शहर में 5032 टेस्ट हो चुके हैं, इनमें से सिर्फ 36 ही पॉजिटिव मिले। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यह है कि जिन लोगों के रैपिड टेस्ट हुए क्या सभी के पीसीआर टेस्ट कराए जाएंगे?

आईसीएमआर की 8 टीमें करेंगी किट का ऑनग्राउंड परीक्षण

केंद्रीय टीम ने मंगलवार को रामगंज क्षेत्र का दौरा किया। अब आईसीएमआर की 8 टीमें रैपिड किट का ऑनग्राउंड परीक्षण करेंगी। किट सही पाई गई तो दो दिन में नई एडवाइजरी जारी की जाएगी।

मेडिकल कॉलेज ने रिपोर्ट में बताई 4 कमियां

1 जो 159 सैंपल पीसीआर में पॉजिटिव थे, उनमें से 94.6 प्रतिशत रैपिड किट से निगेटिव आए। आरटीपीसीआर (पॉलीमर्स चेन रिएक्शन) टेस्ट से ही सार्स और कोविड-19 की पुष्टि की जा रही है।

2 रैंडम सैंपल के लिए तौर पर 168 की जांच की। इसमें से केवल 5.4% की ही रिपोर्ट सही आई।

3 ब्लड टेस्ट में इम्युनोग्लोब्यूलिन के आईजीजी पुराने इंफेक्शन और आईजीएम रिसेंट इंफेक्शन को रिफ्लेक्ट करता है। हैरत की बात है कि रैपिड किट आईजीजी और आईजीएम दोनों को रिस्पांड नहीं कर रही।

4 प्लाज्मा से भी इंफेक्शन का पता चलता है। रैपिड किट ब्लड और सीरम के वायरस भी नहीं पकड़ पाई।

5032 टेस्ट • **36** पॉजिटिव • **4996** निगेटिव • **5%** एक्यूरेसी

रैपिड टेस्ट किट से 10 से 15 मिनट में जांच

रैपिड टेस्ट में ब्लड निकालकर टेस्ट कार्ड में डाला जाता है। एंटीबॉडी का वफर सोल्यूशन ब्लड पर डालते हैं। कार्ड में सिंगल लाइन आए तो रिपोर्ट निगेटिव डबल लाइन आए तो पॉजिटिव। पूरी प्रक्रिया में करीब 10 से 15 मिनट का समय लगता है।

• हालांकि पॉजिटिव आने के बाद पुष्टि पीसीआर जांच से ही होती है। इसमें गले और नाक से स्वाब के सैंपल लेते हैं। रिपोर्ट दो से तीन दिन लगते हैं।

आखिर बिना जांच कैसे खरीदे गए रेपिड किट?

यकीनन चीन एक बार फिर ड्रेगन साबित हुआ है,उसकी नियत हमेशा से ही विश्व विजेता बनने की रही है जिसमे वह कामयाब होता नजर आ रहा है|अमेरिका सहित विश्व के कई देश कोरोना को एक जैविक हथियार मान रहे है और वह आरोप लगा रहे है कि यह वायरस चीन द्वारा उसकी लेब मे ही तैयार किया गया है और अब उपकरणों और दवाइयों के नाम पर कई गुना दरों पर जरूरतमन्द देशों को बेच रहा है|

बताया जा रहा है कि इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च(ICMR) ने चीन कि दो कंपनियों गुआगझु वाण्ड्फ़ो बायोटेक और जुहाई लीवजों डायग्नोस्टिक्स से 5 लाख किट मंगाई थी|इस किट का परीक्षण राजस्थान सहित तीन राज्यों मे किया गया था जहां केवल 5% रिपोर्ट ही सही पायी गयी|जिसके बाद इस किट के उपयोग पर दो दिन के लिए रोक लगा दी गयी है|अब केंद्रीय टीमों की रिपोर्ट के बाद ही इस किट के उपयोग पर निर्णय लिया जाएगा|

इस मामले से जहां कोरोना के खिलाफ लड़ाई बाधित हुई है वहीं हमारे जेहन मे कई सवाल भी खड़े हुए है जैसे कि:-

- कोरोना महामारी के इस कठिन समय मे बिना जाँचे कैसे इस किट के उपयोग कि इजाजत दी गयी?
- किस टीम/कमिटी द्वारा इस किट का परीक्षण किया गया?
- चीन और अन्य देशों मे इस किट की क्या उपयोगिता रही?
- इन दोनों कंपनियों की विश्वसनीयता क्या है?
- क्या इन दोनों कंपनियों द्वारा कोई लोबिंग तो नहीं की गयी थी?
- इन कंपनियों से और किन उपकरणों कि खरीद की गयी है?उनकी उपयोगिता रिपोर्ट कैसी है?क्या उनमे भी कोई खोट है?
- जिन लोगो की रिपोर्ट इस रेपिड किट से आई है क्या उनकी वापिस पी.सी.आर.किट से जांच होगी?

मेड इन इंडिया पर भरोसा करना जरूरी

अब समय आ गया है कि हमे मेड इन इंडिया पर भरोसा करना जरूरी हो गया है|हमारे यहाँ पर भी प्रतिभाओं कि कमी नहीं है,कमी केवल उन पर भरोसा कर उन्हे मौका देने की है|हमारे पास संसाधन,श्रम,पूंजी सभी बहुतायत से है|जिस प्रकार हमे चीनी कंपनियों पर भरोसा करना पड़ रहा है वही मौका हमे हमारी भारतीय कंपनियों को भी देना पड़ेगा|अगर हम मंगल पर पहुच सकते है तो इस प्रकार के मेडिकल उपकरण और दवाइयाँ बनाना कोई कठिन कार्य नहीं है|